

पर पसो पिरियनजी, पाणसे के के पर करे।
इंद्रावती चोए अदियूं, अई हांणे हलो नी घरे॥२०॥

धनी की हकीकत को देखो। हमसे किस तरह की बातें करते हैं। श्री इंद्रावतीजी कहती हैं, हे बहन! अब आप अपने घर चलो।

धणी मंझ अची करे, आंके बेठा वेंण चाय।
वियनके मतू डिए, पण तो पर केही आय॥२१॥

धनी हमारे बीच में आकर, बैठकर वचन कहते हैं। तू दूसरे को तो ज्ञान सुनाती है, पर तेरी हालत क्या है?

॥ प्रकरण ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ ६४८ ॥

हाणे तूं म भूलज रे, भोरडी सुजाणें तूं सेण।
साणे तो डिठां सपरी, भोरी तोहेनी तोहजडे नेण॥१॥

हे मेरी भोली बहन! तू अब मत भूल, प्रीतम को पहचान। घर में तो धनी को तूने अपने नैनों से देखा है।

वेंण वडानी मोहें कडे, भोरी तूं ता तोहेनी जाग।
कींझो नी कत तूं घणीजो, अई तंद पेराईदी आघ॥२॥

मैं बड़ी-बड़ी बातें तुझे कहती हूँ। तू तो फिर भी नहीं जागी। धनी के लिए कुछ कातो। तुम तकले पर सूत डालो।

तें ता पा न कतयो, हुत घुरवो सेर।
जडे उथीदी आतण मंझां, तडे घणूं घुरंदी ही वेर॥३॥

तूने अभी पाव भर भी नहीं काता। वहां सेर (किलो) भर चाहिए। जब आतन (संसार) से उठेगी, तो फिर दुबारा अवसर की चाहना करेगी।

हे जे डींह वंजाइयां, भोरी विसरी विच बेही।
हांणे हलंण संदा, डींहडा, भोरी आया से पेही॥४॥

मेरे आतन (शरीर) में बैठकर तुमने इतने दिन व्यर्थ गंवाए हैं। बहन! अब चलने के दिन नजदीक आ गए हैं। अब प्रीतम ले चलने के वास्ते आए हैं।

रे कते जे उथिए, त तो पर केही।
कां कंनी ही निद्रडी, भोरी घरे साथ नेई॥५॥

यदि बिना काते उठेगी, तो तेरे पर क्या बीतेगी? हे भोरी! क्या इस नींद को घर साथ ले चलेगी?

अंजा न जागे जोर करे, जे हेडी मथां थेई।
पिरी वभेरकां आइया, तोजी सिध को ई वेई॥६॥

तू अभी भी जोर करके नहीं उठती है, तेरे साथ इतनी हो गई। प्रीतम दुबारा आए हैं। तेरी सुध कहां गई?

त्रक तूं सारे सई कर, जोपे कर जोत्रा।
माल तूं बंध मूरडे करे, पई म छड हथां॥७॥

हे बहन! अपने तकले को सीधा कर, अदवान को कस के बांध, माल को मरोड़ कर गांठ लगा और पूनी हाथ से मत छोड़।

अरट फेर उतावरो, तन के डेई ता।
तूं तां गिनंदी सुहाग धणीयजो, तोजे संने हिन सुत्रा॥८॥

शरीर से जोर लगाकर चरखे को जल्दी घुमा। तब तू अपने बारीक सूत का (धनी के सुहाग का) सुख पाएगी।

कतण रेहेंदो अधविच, आए डीह मथां।
कतण वाखूं हलयूं, डिसे न तूं पासां॥९॥

कातना आधा बीच में ही छूट जाएगा। चलने के दिन आ गए हैं। कातने वाली चली गई। तू अपनी तरफ क्यों नहीं देखती?

हांगे जिन थिए बिसरी, कत तूं कोड मंझां।
सुहाग संदो सुत्रडो, संनो थींदो तो हथां॥१०॥

अब तू मत भूल और हिम्मत के साथ सूत कात। तू बारीक सूत कातेगी, तो तुझे सुहाग का सुख मिलेगा।

हांगे तूं म किज निद्रडी, निद्रडी डेरे दुहाग।
तूं तां जागी जोर करे रे, गिन तूं वंजी रे सुहाग॥११॥

अब तू नींद में मत रह। नींद दुःख देगी। तू जोर लगाकर जाग और अपने सुहाग का सुख ले।

ही सुत्र घणो सुहामणो, मोघो थींदो जोर।
सुजाणी तूं सिपरी, जीव मथांई घोर॥१२॥

यह सूत बड़ा सुहावना है, और महंगा हो जाएगा। तू अपने धनी की पहचान कर और अपने जीव को कुर्बान कर दे।

गिन स्याबासी जेडिऐं, कर कां एहेडी पर।
हांगे को थिए विसरी, जे तो पिरी सुजातां घर॥१३॥

कुछ ऐसा कर कि सखियों में शाबासी मिले। प्रीतम घर बुलाने के लिए आए हैं। तू क्यों भूलती है?

॥ प्रकरण ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ ६६१ ॥

भोरी तूं म भूल इंद्रावती, हीं वेर एहेडी आय।
पिरी पांहिंजडो गिनी करे, भोरी वीए तूं कां मसलाय॥१॥

हे इंद्रावती! तू मत भूल। ऐसा धनी का समय पाकर तू अपना धनी ले और दूसरों से सलाह मत ले।

ही पिरी तोके कडे मिडंदा, गिन तूं सुजाणी सुहाग।
एहेडी एकांत तूं कडे लेहेनी, आए तोहेजडो लाग॥२॥

अपने प्रीतम को पहचान कर सुख ले। यह प्रीतम तुझे कब मिलेंगे? ऐसा एकान्त समय फिर कब मिलेगा? आज तुझे समय मिला है।